

नित्य नेगमें मंगल भोगमें येइ माखन वूरा संधाना दूध कोउमल
 ई माखन वूरा संधाना दूधको उवरा दहीको उवरा आम खडवुजा
 की ऋतुमें उवरीया आगे जलकी झारी १ बीडा २ मंगल भोगमें
 मरही माखन वूरा संधाना दहीको कयेरा गोपी वल्लभमें भातदार
 कठी मिरचको दोष खेके स्याक पूरी खरखरी कयेरीये लोण
 लीवू आदा पाचरी की ऋतुमें आदा पाचरी खेरो की ऋतुमें खेर
 बिलसाखकी ऋतुमें बिलसाख मुरंबा घृतकी बरनी पना आम
 रसकी ऋतुमें पना आमरस खडवुजाकी आंवकी उवरीया ख-
 ता खेके शाक २ वा ४ भुजेना १ वा २ अक्षवत्तीयासूजना-
 कृमीदां चूक आरोगे भिरताकी अरुके भरत कान्ती ऋतुमें
 देव कुंभार भोग गोपी वल्लभमें खडवुजाकी झारी २ बीडा २
 ग्वाल होवे झारी गोपी वल्लभमें खडवुजाकी पास एक पद-
 नाके पास पलनामें पीछा दो अक्षवत्तीयासूजना मीश्री पीको
 खेवाकी गोली पेडा बररी रथगनासू १२ दिन ताई बीज नि-
 रोजीकी गोली जन्माष्टमी २२ दिन ताई साम पिकी पंजीरीकी
 गोली शीतलामुहमें १२ दिन ताई मदा मको सीरा बरपी आरोगे
 वा एक महिना ताई गजरासंधाना १२ दिन ताई तिलुवाकी
 गोली आरोगे आंवके दिनमें आंवको सीरा बरपी आरोगे पलना-
 को भोग राज भोगमें आवे. राज भोगमें भात दार मूग कठी घृत
 की कयेरा मिरचको स्याक जलको ज्वाला खेके स्याक कयेरी
 लीये परत भातकी अड बंगाकी ऋतुमें अड बंगा गोपी वल्लभमें
 राज भोगमें शयन भोगमें एसी ई पापड एसेही बिलसाख एसेही
 आंव खडवुजा पना अमरस नारंगीको पना माखन वूरा कयेरी
 ये लोणकी. लीवूकी खेदाकी वा आदा पाचरी संधानाकी कयेरी
 दही खिण दूधको कयेरा लुचैई खीर रायता मीठे स्याक भुजे-
 ना चूनकी लूडी गोपी वल्लभमें तथा राज भोगमें ऋतु अनुसार
 खण्ड टैवी भरता केरीके शरकी शरकी तुलसी शखोदक धूप,
 दीप बीडी बीजा जलकी झारी गजुरजीकी २ ओर स्वस्वपतकी

एक एक श्रीमहाभुजीकी एक । अनोसरके बंयमें मळी माख-
न वूरा संधाना झारी ये सब स्वल्पनकी भरे खोवा मलाई मिगई
मेवा फणी बदायकी कयेरी खोण मिरव वूराकीको दही फूलादिक
मुकुट किरीट धरे जा दिना ता दिना मेवाकी खोचडी आरोगे भो-
गके दरीनकी झारी संस्था भोगमें मळी संधाना आम खडवूजाकी
त्रडलुमें आम खडवूजा वूराकी कयेरी ग्वाल होय रावन भोग-
में भात दार पाण्ड कबी स्याक जलकी कयेरी घृत पूजी स्याक
खोण संधाना आंवकी डवरिया खडवूजा वूराकी कयेरी जलकी
झारी २ वीडा ४ अनोसरके दिनमें अनोसर तद्वत् राय्याको सा-
ज दशमीके रादरी में मिरवारी कर्म ११ कुं गोपी कहु भामे
रोटी बडीको स्याक दयेरी भोगतरे वूराकी खोचडी स्याक
क २ भुजेना पकोडी पकोडीको स्याक दयेरी कहु भामे
पकोडीकी कटी मिरवारी स्याक भुजेना पकोडी धरे कुं (भारत)
में सेव सीरा पूरी हेखडी चालनी सब तरेकी कदली फूलादिक
सैंधो खोण मिरव वूरा चालनी सब तरेकी राजभोगमें तथाउथा-
पनमें १२ कुं १८ कुं तद्वत्की सर आरोगे ८ रुपैयाको कुडको
२० मळजाको होय वूराकी दार पकोडीकी वा बडीकी कबी कर
१८ पक्रानके लुडवा मळीके ४ खीरके ४ सीराके ४ दही-
भातके या प्रमाण फलायके दूने चोगने कुडकारा होय :

Core Mota Mandir Uæ&@ KramA
www.vallabharanya.org
www.vallabharanya.org
(Pushkarmargiya Research Portal)
Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

६५

शुभि के शिर आरोह शोभयन्ति मुखं मम । मुखं हि मम शोभ-
व भूवा ए सं व भगं कुरु । या माहं रघुं म देभि श्रुद्दायै कामा-
यान्यै । इमां वामपि नद्येहं भर्गेन सह क्वेसा ॥ १॥

Core Mota Mandir - U!æ&@^} KramA
.vallabhacharya-agrahara.org
.vallabhacharyakrupa.org
(Pushtimargiya Research Portal)

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

• वरस दिनमें खाली दिन आवे तो नीचे प्रमाण शृंगार होय
 • + बीचको खाली दिन

कार्तिक वदि ३० वूं जो अन्नकूट होय और २ दूजकूं भाई दूज होय तो
 कार्तिक सुदी १ एकमकूं गुलबी जरीके वरु पन्नाके आभरण गोलकी
 रा सादा चंद्रका फरीती शृंगार हलको कर्णफूल इकुरे और गडख-
 खपकूं चेरदार बागा.

• चैत्र वदी १ एकमकूं जोल होय और फागुन सुदी १४ कूं होरी होय
 तो बीचके दिन खाली १५ पुनमको दिन वा दिनकी शृंगार.

फागुन सुदी १४ और चैत्र वदी १ जोल होय तो सुदी १५ दिन खाली
 होय तो नीचे लिखे शृंगार. वीकने नैनसखके वरु - बहारकी
 खोडकी की पाग - आभरण मोना व. सोनाके मिलमा - चेरदार
 वाचा शृंगार हलकी श्रीजगन कय मरण के नीचे अंक चौकी त.
 माला १ छेदी त. गादीपे हार १ त. माला चार ४ और गुंजाकी
 माला कपोलपे गुलालके दाऊ और टपका करने जदी रंगनी
 नहीं.

श्रीविक्रमजीको सावन इती १को हिंडोरा विराजके मुहूर्तमें
 जा करस वरुआ आवे होय तो वरत सावन वदी २ के दिने
 हिंडोरा विराजे वा दिन देहे हिंडोराके शृंगार होय तथा असा-
 ड सुदी १५ के दिना असाडी पुन्यके शृंगार होय सो सावन
 वदी १ को दिन खाली वा दिना शृंगार नीचे प्रमाणे.

श्वेत वरु मल मलके बहारकी खिडकीकी पाग श्वेत चंद्रका
 शृंगार उष्णकालको हलको गडे खखप वा दिन छेदी परदनी
 धरे तथा चंद्रमा अच्छे होय तो एकमकूं हिंडोरा और ये शृंगार
 असाड सुदी १४ के दिना करने.

श्रावण वदि २ पीले रंगके वस्त्र त- अंगको तनिशां त- पी-
 ले श्याम खिडकीकी पाग तैयार करि राखनी. आभरण सब पन्नाके मा-
 ग मोतीनकी ली ली मणीनकी माहा नेपुर कटपेच पोंची वाजू
 बंद हांस अलकावली तिलजी जेहर कर्णफूल सीसफूल कलंगी वेणु
 वेन ये सब पन्नाके निकालने श्रीमस्तकपे पन्नाकी मोररिखा या
 प्रमाण आभरण सिद्ध करि राखने पन्नाके आभरणको शृंगार
 करने सो पहले दिनसु हलको. वहोत हलको नही भारी. चरणा-
 रविन्द पर्यन्त. पन्नाके आभरण थोडे होय तो बीचमें पीरोजाके
 आभरण धरावने. जे जे नहि होय सो कर्णफूल दो दो धरावने
 चार नही धरावने. साजकी पिछवाड पीली बांधनी साडे चार कजे
 धंदाहद मोती या प्रमाण बीजाके दिखे प्रकार सप्त भोग ताई
 नित्य रीत वल्लभ चर्याग्रहारा.org श्रीमद गोकुलजी महाराज के पीछे
 जरीके भारी पंजाबने आरती धके पीछे अंगोर करने
 उथापन भोगको सेवा करने बसवने पहले पीछे (पिछे) के दिन उत्स-
 वकी सिद्धकी सुजनी बिछाई होय तो
 आवे ताहां ताई नित्य रीत प्रमाण सेवा पंचनी तावखत दूसरो त-
 तीसरो मुखिया चांदीके हिंडोलाक पीली झालर बांधनी तथा पीले
 सिंघासन बिछावनी तथा बाजूके दोनो हिंडोला नमें गारी ताकिया
 पे कोरी सुपेती चबाईके बिछावनी झालर खालकी लाल रहेवे दे-
 नी संध्या आरती भये पीछे मुखियाजी वेणुवेन बडे करे. सं-
 ध्याती भये पीछे मुखियाजी आपटियाकू करे जो तिवारीकी जाली
 बंद कर देनी दूसरो मुखिया बगली ताकिया उगवे फेर
 झारी प्रसादी उगवके खंगोरके टांक राखे. तीसरो मुखिया उगरकी
 सोनाकी क्येरी तथा उकरा धरवेको कूजाये सिंघासन पे धरे फेर
 फूलको झाड उगवे कडे मुखियाजी माहा बडी करवे शाय्याकी
 तव कडीमें साजे - उकरा भोग धरे दूसरो तीसरो मुखिया
 पंखा चमर हिंडोलाके पास तैयार करि राखे. मुखियाजी भोग
 धरवुके पीछे हिंडोला में बीडा साजे त- माहा साजे दूसरो मु-
 खिया झूमक बांधे. मुखियाजी दोइ छोटी झारी भरे शाय्याके
 पड्याके ऊपर राखे फेर उकरा भोग सरावे मुखवरन करके श्रीग-
 न्नाकी तं हिंडोला में पधरावे. दूसरो तीसरो मुखिया दूसरे

सुधा सरकानि पीछे १५ रत्न त. ३ ल.

रथ यात्रा के दिन श्रृंगार बड़े भये पीछे पाद
सोनी के प्रसारण.

जो ३ पहिले श्रीमस्तक पे ५ को होय सो ३ को पीछे बु.
श्रीश्रृंग मे हाँस पदक के लवल माला श्रीगोबुद्धने
श्री हस्तके बाहर सुँ आवे
गाड़ी पे १ माला मोतीकी २ माला हरी मराठी वारी
२ लाल मराठी वारी हीरा को १ माला २ मोतीकी पीछे
जुंजा माला.

रुही मराठीकी माठाही कठला कही जाय हे
रुँदको नामे। कठला नाम बदरनखानही नखनखानही
पीछे सुँ आवे

शोर शिखा कतरा चट्टिका को ईभी होय एकही आवे

माला बीचको वासन द्वादशी के दिन यशोपवीत के
उ १ बीचमे तथा ठिकाने कठला धरे हे.

दो आही आवे किं होरान कभी बेन नही आवे;

श्रीश्रृ का तथा बायो
आवे।

दान एकादशी के दिन जामे गके श्रृंगार समय मे
ब्रज मी धरे जाय हे सो नही आवे
Core Mota Mandir - Uia@^} KramA
vallabhacharya-agrahara.org
vallabhacharyakrupa.org
(Pushimargiya Research Portal)

जन्म बन्नी कुं ही कसे पद्माभन वारो थार
जहाँ पध बो या जा म वहाँ हरी को प्रबदल
माधुने अपोर उत्सव न सुँ वही मन्त माते
स्तान के पीछे पाद बुकु मही मरु होय

दोलो सबके दिन रंग विरंगी गुलान नही उडे
जात लाव ही उडे.

श्री चाँ दी की जेमनी आवे सोता की बाँई आवे

सिंहासन पे कलश न ही आवे
श्रृया के जेमनी आरी श्रीमस्तक
नक्षी आवे.

पुत्री श्री गुरुसंज्ञीको उग्रवकुल

कलंगी धर वानंही

गुरुकुल मुकुटके शृंगार

कुलुधरे पानके डिकाने

मुकुट विना घेराको तुराधरे

जन्माशमीकुं छोडे स्वरूप ररामी

मुकुट खेले नही
मूलको होयतो खेले

Core Mota Mandir - Ujain@KramA.vallabhacharya-agrahara.org
vallabhacharyakrupa.org
(Pushimargiya Research Portal)

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

पारुताने मुकु
वानंही धरे